

MAIN NEWS HEADLINE अब देव सभा में गूंजेगी पंडवानी... दुनिया के रंगमंच

वर्षिय सूची (Table of Contents):

- >> प्रस्तावना...
- >> एम्स रायपुर में ली अंतमि सांस छत्तीसगढ़ सहति पूरे कला जगत में शोक की लहर...
- >> गनयिरी गांव और सांस्कृतिक जगत में अपूरणीय क्षति...
- >> तीनों सर्वोच्च पद्म सम्मानों से थी अलंकृत...
- >> तंबूरे को गदा और धनुष बनाकर जीवंत की महाभारत अनूठी थी गायन की कापालकि शैली...
- >> एकतारा (तंबूरा) बना जाता था हथियार...
- >> द्रोपदी चीरहरण और कीचक वध वे भावुक और रौद्र प्रसंग जिन्होंने दर्शकों को मंत्रमु...
- >> बचपन की यादें और मार्मिक पुकार...
- >> कीचक वध और दुशासन वध की जीवंतता...
- >> कला के लिए पतयियों को छोड़ा और सहा समाज का बहिष्कार ऐसा था लौह महिला का कड़ा स...
- >> रूढ़िवादी समाज और पारिवारिक विद्रोह...
- >> मंच पर मनचलों को सखाया सबक...
- >> हाथ पर गुदे टैटू से करती थी हस्ताक्षर भलाई स्टील प्लांट में नौकरी के दनि की...
- >> भलाई स्टील अथॉरिटी (BSP) में वेतन का कसिसा...
- >> मंच से नीचे मोम की तरह मुलायम स्वभाव पारधी समुदाय से विश्व पटल तक का सफर...
- >> घर की बड़ी बुजुर्ग जैसा अहसास...
- >> नषिकर्ष...
- >> महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर...

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ की माटी से उठकर वैश्विक मंच पर भारत का नाम रोशन करने वाली लोक-कलाकार डॉ. तीजन बाई अब हमारे बीच नहीं रही। महाभारत की कथा को अपनी दमदार आवाज और अद्वितीय अभिनय से जीवंत करने वाली लौह महिला ने दुनिया के रंगमंच को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया है। उनके नदिन से लोक-कला और सांस्कृतिक जगत में एक ऐसा शून्य पैदा हो गया है, जिसे कभी भरा नहीं जा सकता।

तीजन बाई की पहचान एक ऐसी जुझारू कलाकार के रूप में थी, जिन्होंने समाज की रूढ़ियों को तोड़कर कला को एक नया मुकाम दिया। अपनी पारंपरिक गायकी से देश-विदेश के दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने वाली इस महान शख्सियत का जीवन संघर्ष और सफलताओं की एक अद्भुत मसाल है।

एमस रायपुर में ली अंतमि सांस: छत्तीसगढ़ सहति पूरे कला जगत म

पंडवानी की पुरोधा डॉ. तीजन बाई का 70 वर्ष की आयु में नधिन हो गया। वे पछिले कुछ समय से अस्वस्थ थी और छत्तीसगढ़ की राजधानी स्थिति अखलि भारतीय आयुर्वज्जिज्ञान संस्थान (एमस रायपुर) में उनका इलाज चल रहा था। डॉक्टरों के अथक प्रयासों के बावजूद, उन्होंने चकित्सालय में अंतमि सांस लेते हुए इस असार संसार से वदि ले ली।

गनयिारी गांव और सांस्कृतिक जगत में अपूर्णीय क्षति

तीजन बाई के नधिन की खबर मलिते ही उनके गृह ग्राम गनयिारी (दुर्ग-भलिाई के पास) सहति पूरे राज्य में शोक की लहर दौड़ गई। देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोक-कला प्रेमियों ने उनके नधिन पर गहरा दुख व्यक्त कयिा है। कला समीक्षकों का कहना है कि अब तीजन बाई स्वर्ग की देव सभा में लोक महाभारत की गाथा पंडवानी गाएंगी और देव वृन्द उनकी अमर वाणी का आनंद लेंगे।

तीनों सर्वोच्च पद्म सम्मानों से थी अलंकृत

डॉ. तीजन बाई भारत की उन चुनदिा हस्तियों में शामिल थी, जिन्हें सरकार द्वारा तीनों प्रमुख नागरिक सम्मान प्रदान कएि गए थे। कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें नमिनलखिति सम्मानों से नवाजा गया था:

- >> पद्म श्री:कला क्षेत्र में शुरुआती वैश्विक पहचान के बाद मलिा।
- >> पद्म भूषण:पंडवानी कला को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए।
- >> पद्म वभिषण:भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान, जो उनकी सर्वोच्च कला साधना को दर्शाता है।

तंबूरे को गदा और धनुष बनाकर जीवंत की महाभारत: अनूठी थी गायन

पंडवानी छत्तीसगढ़ की एक अनूठी लोक-कला है जो पूरी तरह से महाभारत की कथा पर आधारति है। वैसे तो पंडवानी की दो शैलियां होती हैं (वेदमती और कापालकि), लेकिन तीजन बाई ने कापालकि शैली को चुना, जो खड़े होकर और अभनिय करते हुए गाई जाती है। इस शैली में पहले केवल पुरुषों का ही एकाधिकार माना जाता था।

एकतारा (तंबूरा) बना जाता था हथयिार

मंच पर तीजन बाई जब मोरपंखों से सजे अपने एकतारे यानी तंबूरा को हाथों में थामती थी, तो वह महज एक वाद्य यंत्र नहीं रह जाता था। अपनी गरजदार हुंकार और चपलता से वे उस तंबूरे को कभी अर्जुन का गांडीव धनुष तो कभी महाबली भीम की भारी-भरकम गदा में बदल देती थी। दर्शकों को ऐसा आभास होता था कि वे साक्षात् द्वापर युग के महाभारत युद्ध को देख रहे हैं।

सरकारी नयिमों और ऐतहासिक अभिलेखों की तरह उनकी इस कला को वैश्विक दस्तावेज माना गया है। यदि आप भारत के ऐतहासिक और कानूनी दस्तावेजों के बारे में जानना चाहते हैं, तो इंडिया कोड: भारत के सभी कानून और अधिनियम अब एक ही पोर्टल पर उपलब्ध हैं, जिसे आप चेक कर सकते हैं।

द्रोपदी चीरहरण और कीचक वध: वे भावुक और रौद्र प्रसंग जनिहोन

तीजन बाई के पंडवानी गायन में हर रस का समावेश होता था, लेकिन वीर, रौद्र और करुण रस पर उनकी पकड़ बेजोड़ थी। उनके कार्यक्रमों में द्रोपदी चीरहरण का प्रसंग सबसे ज्यादा भावुक और लोकप्रिय होता था। यह प्रसंग उनके अपने हृदय के भी बेहद करीब था, जिसे गाते समय वे खुद भाव-वभोर हो जाती थीं।

बचपन की यादें और मार्मिक पुकार

तीजन बाई ने एक साक्षात्कार में बताया था कि बचपन में जब वे अपने नाना से द्रोपदी चीरहरण की कथा सुनती थीं, तो उनकी आंखों से आंसू बह निकलते थे। जब वे खुद मंच पर कौरवों के अत्याचार और द्रोपदी की करुण पुकार को अपनी आलाप से प्रस्तुत करती थीं, तो पंडाल में बैठे हजारों दर्शकों की आंखें नम हो जाती थीं।

कीचक वध और दुशासन वध की जीवंतता

महाभारत युद्ध के वीर रस से भरे प्रसंगों में वे भीम के पराक्रम का रोमांचक वर्णन करती थीं। वरिष्ठ नगर में अज्ञातवास के दौरान द्रोपदी पर बुरी नजर रखने वाले कीचक के वध का प्रसंग उनकी कला का शखिर था। भीम द्वारा कीचक को मारते समय कीचक की चीत्कार और वृहन्नला बने अर्जुन के मृदंग वादन की थाप को वे मंच पर अकेले ही जीवंत कर देती थीं। सहि जैसी चपलता के साथ मंच पर उनका घूमना और तंबूरा संचालन देखते ही बनता था।

कला के लिए पतयियों को छोड़ा और सहा समाज का बहिष्कार: ऐसा था

तीजन बाई को लौह महिला (Iron Lady) ऐसे ही नहीं कहा जाता। उनका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन भयंकर संघर्षों से भरा था। भिलाई के गनयिरी गांव में जन्मी तीजन बाई का विवाह महज 12 साल की उम्र में हो गया था। इसके बाद 13 साल की उम्र से

उन्होंने मंचों पर पंडवानी की प्रस्तुत देना शुरू कर दिया था।

रूढ़िवादी समाज और पारिवारिक विद्रोह

उस दौर में पारधी समुदाय (जसिका मुख्य पेशा चड़िया पकड़ना और शहद निकालना था) में किसी महिला का पुरुषों के वर्चस्व वाली शैली में मंच पर गाना घोर पाप माना जाता था। तीजन बाई के जीवन में तीन विवाह हुए, लेकिन तीनों ही पति उनकी पंडवानी प्रस्तुत और उन्हें मलिन करने वाले मान-सम्मान से ईर्ष्या रखते थे। पतियों ने कला छोड़ने का दबाव बनाया, लेकिन तीजन बाई ने अपनी कला से समझौता नहीं किया और पतियों को छोड़ दिया।

मंच पर मनचलों को सखाया सबक

एक बार मंच पर जब वे कीचक वध प्रसंग का प्रदर्शन कर रही थीं, तब एक पुरुष अभद्र गालियां बकता हुआ मंच पर चढ़ आया और उन पर झपट पड़ा। तीजन बाई घबराई नहीं, बल्कि रौद्र रूप धारण कर अभिनय के अंदाज में ही उस पर टूट पड़ी। उन्होंने अपना भारी तंबूरा हवा में लहराया और स्थानीय लोकभाषा में चीखते हुए कहा - तुमने केवल मेरा ही नहीं, बल्कि मेरी कला और इस पवित्र मंच का अपमान किया है, तुम माफी के लायक नहीं हो। उनकी इस भीषण हुंकार से डरकर वह पुरुष लज्जति होकर भाग खड़ा हुआ। इसके बाद तीजन बाई समाज के बहिष्कार की परवाह किए बिना एकाकी अपनी राह पर आगे बढ़ गईं।

हाथ पर गुदे टैटू से करती थी हस्ताक्षर: भलाई स्टील प्लांट में

डॉ. तीजन बाई पूरी तरह से अनपढ़ थीं, उन्हें अक्षरों का ज्ञान नहीं था। लेकिन उनके पास एक गजब की इच्छाशक्ति थी। उन्होंने अपने हाथ पर एक गोदना (पारंपरिक टैटू) गुदवाया हुआ था। वे उसी टैटू की बनावट को देखकर अपने हस्ताक्षर की नकल करना सीख गई थीं।

भलाई स्टील अथॉरिटी (BSP) में वेतन का कसिसा

उनकी इस अनोखी प्रतभा का उपयोग तब होता था जब वे महीने में एक बार भलाई स्टील अथॉरिटी (Bhilai Steel Plant) में अपना वेतन (Salary) लेने जाती थीं। वे अपने हाथ के टैटू को देखती और हूबहू दस्तखत (Signature) रजिस्टर पर उकेर देती थीं। विश्व पटल पर प्रसिद्धिपाने के बाद भी वे अपनी इस जमीनी सादगी को कभी नहीं भूलीं।

जैसे तीजन बाई ने कला जगत में रिकॉर्ड बनाए, वैसे ही खेल जगत के नवीनतम अपडेट के अनुसार वेरस्टैपेन ने भी इतिहास रचा है।

इसकी अधिक जानकारी के लिए आपनॉरसि बने चैंपयिन, पर वेरस्टैपेन ने तोड़ा 31 साल पुराना रिकॉर्ड!लेख देख सकते हैं।

मंच से नीचे मोम की तरह मुलायम स्वभाव: पारधी समुदाय से वशिव

मंच पर वीर और रौदर रस की साक्षात् प्रतमूर्ति नजर आने वाली तीजन बाई का स्वभाव वास्तविक जीवन में इसके बिल्कुल वपिरीत था। वे मंच से नीचे उतरते ही अत्यधिक सरल, सौम्य और मोम की तरह मुलायम स्वभाव की महिला बन जाती थी। वैचारिक रूप से वे जतिनी सख्त और दृढ़ थी, व्यवहार में उतनी ही नरम थी।

घर की बड़ी बुजुर्ग जैसा अहसास

जो कोई भी उनसे नज्जी जीवन में मलिता था, उसे ऐसा महसूस होता था मानो वे अपने ही घर की कसिी बड़ी बुजुर्ग भद्र महिला से बात कर रहे हों। छत्तीसगढ़ के जंगलों और प्रकृति से जुड़े पारधी समुदाय से नकिलकर, पेरसि, लंदन और न्यूयॉर्क जैसे वैश्विक रंगमंचों तक का सफर तय करने के बाद भी उनके भीतर का ठेठ छत्तीसगढ़ी भोलापन हमेशा जदिा रहा।

गरीब और वंचति समाज से आने वाली तीजन बाई ने अपनी मेहनत से जो मुकाम पाया, वह आज के युवाओं के लिए प्रेरणा है। इसी तरह समाज के कल्याण के लिए सरकारें भी अभियान चलाती हैं, जैसे उत्तर प्रदेश की नवीनतम योजना के बारे में जानने के लिए आप बड़ी खबर: योगी सरकार का जीरो पावर्टी महाभियान! मुफ्त राशन, पेंशन और आवास... लसिट में देखें अपना नामको देख सकते हैं और पात्रता सूची (Beneficiary List PDF) डाउनलोड कर सकते हैं।

नषिकर्ष

डॉ. तीजन बाई का जाना भारतीय लोक-संस्कृति के एक स्वर्णमि अध्याय का अंत है। उन्होंने पंडवानी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वह पहचान दलाई जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक रहेगी। अनपढ़ होने के बावजूद दुनिया के बड़े-बड़े वशिवविद्यालयों ने उन्हें मानद उपाधियों से सम्मानति किया। उनका कड़ा सामाजिक संघर्ष, अदम्य साहस और अपनी कला के प्रति अटूट नषिठा उन्हें हमेशा अमर रखेगी। भले ही वे शारीरिक रूप से इस असार संसार से वदिा हो चुकी हैं, लेकिन अपनी गरजदार हुंकार और तंबूरे की टंकार के रूप में वे हमेशा कला प्रेमियों के दिलों में जीवति रहेंगी।

महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर

प्रसदिध पंडवानी गायिका डॉ. तीजन बाई का नधिन 70 वर्ष की आयु में अखलि भारतीय आयुर्वज्जिज्ञान संस्थान (एमएस), रायपुर में इलाज के दौरान हुआ।

तीजन बाई छत्तीसगढ़ की सुप्रसिद्ध लोक-कला पंडवानी गायन के लिए विश्व विख्यात थी, जो मुख्य रूप से महाभारत की कथाओं पर आधारित होती है।

कापालकि शैली में कलाकार मंच पर खड़े होकर, हाथ में तंबूरा लेकर अभिनय और हुंकार के साथ गाता है। पहले यह केवल पुरुषों के लिए आरक्षण माना जाता था, लेकिन तीजन बाई ने 13 वर्ष की उम्र में इस रूढ़ि को तोड़कर इसमें महारत हासिल की।

उनका सबसे पसंदीदा, भावुक और प्रसिद्ध प्रसंग द्रोपदी चीरहरण था, जसि वे अत्यंत मार्मिक और जीवंत तरीके से प्रस्तुत करती थी और जसि सुनकर वे बचपन में भी रो पड़ती थी।

डॉ. तीजन बाई को भारत सरकार द्वारा तीनों प्रतिष्ठित पद्म पुरस्कार - पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण से अलंकृत किया गया था।

तीजन बाई पूरी तरह अनपढ़ थी, लेकिन वे अपने हाथ पर गुदे हुए पारंपरिक टैटू (गोदने) की बनावट को देखकर अपने हस्ताक्षर की नकल कर लेती थी, जिसका उपयोग वे भलाई स्टील प्लॉट में वेतन लेते समय करती थी।